
आलस्य और अलबेलापन - 8

अव्यक्त बापदादा :- (17. 10. 1970)

➡ _ ➡ जैसे कहावत है छोटे सुभानअल्ला। लेकिन बापदादा कहते हैं छोटे तो समान अल्लाह। सभी बातों में, कदम-कदम में समानता रखो। लेकिन समानता कैसे आयेगी? समानता के लिए दो बातें ध्यान में रखना है। जैसे कहावत है छोटे सुभानअल्ला। लेकिन बापदादा कहते हैं छोटे तो समान अल्लाह। **सभी बातों में, कदम-कदम में समानता रखो।** लेकिन समानता कैसे आयेगी? समानता के लिए दो बातें ध्यान में रखना है।

➡ _ ➡ साकार रूप में क्या विशेषतायें थी? **एक तो सदैव अपने को आधार मूर्त समझो।** सारे विश्व के आधार मूर्ती इससे क्या होगा कि जो भी कर्म करेंगे जिम्मेवारी से करेंगे। अलबेलापन नहीं रहेगा। जैसे बापदादा सर्व के आधारमूर्त हैं वैसे हरेक बच्चा विश्व के आधार मूर्त हैं। **जो कर्म आप करेंगे, वह सभी करेंगे।**

➡ _ ➡ संगम पर जो रस्म चलती है, भक्तिमार्ग में बदलकर चलती है। सारे विश्व के आप आधार मूर्त हो। हरेक को अपने को आधार मूर्त समझना है और दूसरा उद्धारमूर्त बनना है। **जितना अपना उद्धार करेंगे उतना औरों का भी उद्धार कर सकेंगे। जितना औरों का उद्धार करेंगे उतना अपना भी उद्धार करेंगे।** अपना उद्धार नहीं करेंगे तो औरों का कैसे करेंगे।

➡ _ ➡ औरों का उद्धार तब करेंगे जब उद्धारमूर्त बनेंगे। छोटे होते भी कर्तव्य बाप के समान करना है। यह याद रखने से समानता आयेगी।

अव्यक्त बापदादा :- (22. 10. 1970)

➡ _ ➡ अब मास्टर रचयितापन का नशा धारण कर रचना के **सर्व आकर्षण से अपने को दूर करते जाओ।**

➡ _ ➡ बाप के आगे रचना हो लेकिन अब समय ऐसा आने वाला है जो मास्टर रचयिता, मास्टर नालेजफुल बनकर उस आकर्षक पावरफुल स्थिति में स्थित न रहे तो रचना और भी भिन्न भिन्न रंग-ढंग, रूप और रचेगी। इसलिए फुल बनने के लिए स्टेज पर पूरी रीति स्थित हो जाओ तो फिर कहाँ भी फेल नहीं होंगे।

➡ _ ➡ अभी बचपन की भूलें, अलबेलेपन की भूले, आलस्य की भूले, बेपरवाही की भूलें रही हुई हैं। इन चार प्रकार की भूलों को ऐसे भूल जाओ जैसे सतयुगी दुनिया में भूल जायेंगे।

➡ _ ➡ तो ऐसा पावरफुल शक्तिस्वरूप, शस्त्रधारी स्वरूप, सदा जागती ज्योति स्वरूप अपना प्रत्यक्ष रूप दिखाओ। अभी आपके अपने अपने भक्त आप गुप्त वेषधारी देवताओं को फिर से पाने के लिए तड़फ रहे हैं। आप के सम्पूर्ण मूर्त प्रत्यक्ष होंगे तब तो आप के भक्त प्रत्यक्ष रूप में अपने इष्ट को पा सकेंगे।

➡ _ ➡ भल आवाज सुनेंगे लेकिन यह भी याद रखना एक तरफ आसुरी आत्माओं की आवाज और भी आकर्षक तथा फुल फोर्स में होगी। दूसरी तरफ आप के भक्तों की आवाज भी कई प्रकार से और फुल फोर्स में होगी। अभी प्रत्यक्ष रूप में क्या लाना है और क्या नहीं लाना है वह भी परखना बुद्धि का काम है। इसलिए अभी रियायत का समय गया। **अभी रूहानियत का समय है। अगर रूहानियत नहीं होगी तो भिन्न-भिन्न प्रकार की माया की रंगत में आ जायेंगे।** इसलिए आज बापदादा फिर भी सूचना दे रहे हैं।

➤➤ दो बातों में समानता :-

- _ ➤➤ न्यारा और प्यारा
- _ ➤➤ लव और लॉ
- _ ➤➤ ज्ञान और योग का बैलेंस
- _ ➤➤ याद और सेवा का बैलेंस
- _ ➤➤ बालक और मालिकपन का बैलेंस
- _ ➤➤ सच्चाई और सफाई
- _ ➤➤ बाप और वर्सा
- _ ➤➤ पूर्वज और पूजनीय
- _ ➤➤ स्नेह और शक्ति
- _ ➤➤ आदि और अनादि स्मृति
- _ ➤➤ अल्फ और बे
- _ ➤➤ मुक्तिधाम और जीवनमुक्तिधाम
- _ ➤➤ कथनी और करनी
- _ ➤➤ साथी और साक्षी
- _ ➤➤ त्याग और तपस्या
- _ ➤➤ साक्षात्कारमूर्त और साक्षात् बाप समान
- _ ➤➤ अन्दर और बाहर एक समान
- _ ➤➤ सी फादर फालो फादर
- _ ➤➤ सुनना और समाना
- _ ➤➤ उदाहरणमूर्त और उद्धारमूर्त
- _ ➤➤ महादानी और वरदानी
- _ ➤➤ महान और मेहमान
- _ ➤➤ पवित्र और योगी
- _ ➤➤ उमंग और उत्साह
- _ ➤➤ हिम्मत और मदद
- _ ➤➤ रमणीकता और गंभीरता
- _ ➤➤ मेहनत और मोहब्बत
- _ ➤➤ अधिकारी और सत्कारी
- _ ➤➤ स्वमान और सम्मान
- _ ➤➤ बंधनमुक्त और योगयुक्त
- _ ➤➤ जलाना और मनाना
- _ ➤➤ आकारी और निराकारी
- _ ➤➤ दाता और विधाता
- _ ➤➤ मनमनाभव और मद्याजीभव

➤➤ स्वयं को आधारमूर्त समझना

➤➤ _ ➤➤ हम पूर्वज हैं

→ जो कर्म हम करेंगे वही सब करेंगे

➤➤ _ ➤➤ हम आधार हैं, नींव हैं

→ हमारे बिना इस संसार की इमारत गिर जाएगी

➤➤ उद्धार करना

➤➤ _ ➤➤ तारना, मुक्त करना

→ जितना विश्व कल्याण करेंगे स्व का कल्याण स्वतः ही होगा.

→ जितना दूसरों को बाप की याद दिलाएंगे, स्वयं की याद बढ़ती

जाएगी

■ अपना भी उद्धार, दूसरों का भी उद्धार

■ अपना कल्याण, दूसरों का भी कल्याण

■ अपनी उन्नति दूसरों की भी उन्नति

■ स्वयं ही याद में रहना, दूसरों को भी याद दिलाना

➤➤ _ ➤➤ आधारमूर्त और उद्धारमूर्त

→ ये दो बातें याद रखने से समानता आ जाएगी

➤➤ हम रचता, रचयिता हैं :-

➤➤ _ ➤➤ रचना के आकर्षण हमें ना खींचे

→ देह, प्रकृति, साधन,

■ इन आकर्षणों से स्वयं को दूर करना है

➤➤ भूलें जो भूलनी है :-

➤➤ _ ➤➤ बचपन की अज्ञानता वश की हुई भूलें

➤➤ _ ➤➤ अलबेलेपन की भूले

➤➤ _ ➤➤ आलस्य की भूले

➤➤ _ ➤➤ बेपरवाही की भूलें

■ भूलों का भी निदान करना है, कौन से विकार के वश ये भूल हुई है

■ अध्यात्मिक डिटेक्टिव, चिकित्सक बन विकारों का diagnosis करना

है

■ पश्चताप करना, प्रतिज्ञा करना की आगे ये भूलें नहीं करेंगे

➤➤ _ ➤➤ पावरफुल शक्तिस्वरूप, शस्त्रधारी स्वरूप, सदा जागती ज्योति स्वरूप बनना है

➤➤ _ ➤➤ एक तरफ आसुरी शक्तियां पुकार रही, एक तरफ भक्त पुकार रहे

➤➤ _ ➤➤ परखने की शक्ति को बढ़ाना है

→ परखना आ गया तो फिर गलतियाँ नहीं होंगी

- अभी रियायत का समय नहीं, रूहानियत का समय है

⇒ _ ⇒ बाबा को स्नेह और अधिकार की सूक्ष्म रस्सी से बांधकर रखना है..
